53

अपने शत्रुओं को यीशु के उत्तर

(22:15-46)

इस अध्याय में कई झगड़े हैं, जिनमें यीशु के विरोधियों ने उसे बदनाम करने के प्रयास किए। इन विरोधियों में फरीसी और हेरोदी (22:15-22), सदूकी (22:23-33), और एक फरीसियों का व्यवस्थापक (22:34-40) थे। अध्याय का समापन यीशु के ''मसीह'' के विषय में एक प्रश्न के साथ फरीसियों का मुंह बन्द करने के साथ होता है (22:41-46)।

कर देने पर प्रश्न (22:15-22)

15तब फरीसियों ने जाकर आपस में विचार किया, कि उसको किस प्रकार बातों में
फंसाएं। 16अत: उन्होंने अपने चेलों को हेरोदियों के साथ उसके पास यह कहने को भेजा,
''हे गुरु, हम जानते हैं, कि तू सच्चा है; और परमेश्वर का मार्ग सच्चाई से सिखाता है;
और किसी की परवाह नहीं करता, क्योंकि तू मनुष्यों का मुंह देखकर बातें नहीं करता।
17इसलिए हमें बता तू क्या सोचता है? कैसर को कर देना उचित है कि नहीं।'' 18यीशु ने
उनकी दुष्टता जानकर कहा, ''हे कपटियो, मुझे क्यों परखते हो? 19कर का सिक्का मुझे
दिखाओ।'' तब वे उसके पास एक दीनार ले आए। 20उसने, उनसे पूछा, ''यह छाप और
नाम किस का है?'' 21उन्होंने उससे कहा, ''कैसर का।'' तब उसने उनसे कहा, ''जो कैसर
का है, वह कैसर को; और जो परमेश्वर का है, वह परमेश्वर को दो।'' 22यह सुनकर
उन्होंने अचम्भा किया, और उसे छोड़कर चले गए।

आयत 15. यीशु के विरोधियों में **फरीसी** सबसे मुखर थे (3:7 पर टिप्पणियां देखें; 15:1)। उसके साथ उनके झगड़े मुख्यतया धार्मिक मुद्दों पर आधारित होते थे (9:11, 34; 12:2, 24, 38; 15:1, 2; 16:1; 19:3)। यहां पर फरीसियों को समझ आ गया कि यीशु अपने दृष्टांतों में उन्हीं की बात कर रहा था, जिससे उन्हें ठोकर लगी (21:45)। लोगों के डर से चाहे वे उसे सार्वजनिक रूप में कुछ नहीं कह सकते थे (21:46), परन्तु उसके पास जाकर उन्होंने **आपस में विचार किया कि उस को किस प्रकार बातों में फंसाएं**।

आयत 16. यीशु के साथ आमने-सामने बात करने के बजाय फरीसियों ने **अपने चेलों को उसके पास भेजा**। ये लोग उनके संरक्षण में रहने वाले छात्र थे, बिल्कुल वैसे ही जैसे पौलुस गमलीएल नामक एक फरीसी का छात्र था (प्रेरितों 5:34; 22:3)। बाद में यीशु द्वारा उनके चेलों और सदूकियों को शांत कर देने के बाद फरीसियों ने निर्णय लिया कि वे उससे आमने-सामने बात करेंगे (22:34)।

फरीसियों के चेलों के साथ इस सामने में **हेरोदियों** ने साथ दिया। फरीसी और हेरोदी एक

दूसरे के स्वाभाविक शत्रु थे, क्योंकि हेरोदी लोग हेरोदेस के शासन के पक्के समर्थक थे।[1] तौभी अपने साझे शत्रु अर्थात यीशु के साथ लड़ने के लिए दोनों मिल गए।[2] एक पुरानी मध्यपूर्व की कहावत यहां लागू होती है कि "मेरे शत्रु का शत्रु मेरा मित्र है।"

हेरोदी लोगों का कोई धार्मिक गुट नहीं था और शायद वे कोई संगठित राजनैतिक दल भी नहीं थे। यहां पर वे हेरोदेस अन्तिपास के समर्थक बने होंगे, जो रोमी नियुक्ति के द्वारा गलील और पिरिया का हाकिम था। जेलोतेसी लोग हेरोदियों के प्रत्यक्ष विरोधी थे। ये लोग राजनैतिक रूप में और कई बार सैनिक रूप में सक्रिय होते थे। ये अतिराष्ट्रवादी यहूदी प्रतिज्ञा किए हुए देश पर रोमी कब्जे को तुच्छ मानते थे। यीशु का एक चेला शमौन इसी गुट में से था (लूका 6:15)।

यूनानी-रोमी संसार में चापलूसी को बुराई के रूप में देखा जाता था।[3] परन्तु इसने फरीसियों के चेलों और हेरोदियों को यीशु को फंसाने की अपनी कोशिश के लिए चापलूसी करने से रोका नहीं। उसे **हे गुरु** कहने के बाद उन्होंने अपना भरोसा जताया कि वह **सच्चा** यानी "ईमानदार" (NJB) या "इसका पक्का" (NIV) है। उन्होंने कहा कि यीशु **परमेश्वर का मार्ग सच्चाई से सिखाता** है। उन्होंने अपनी चापलूसी यह कहते हुए बन्द की कि यीशु किसी की **परवाह** नहीं करता, क्योंकि वह **मनुष्यों का मुंह देखकर बातें नहीं करता** था। यूनानी धर्मशास्त्र के मूल में कहा गया है, "तू लोगों के मुंह को नहीं देखता।"

इस आयत में यीशु के शत्रुओं ने जो कुछ भी कहा था, वह सही था। स्पष्टतया जो उन्होंने कहा था, वे उसे मानते नहीं थे, नहीं तो वे उसके पीछे चल रहे होते। इसके विपरीत उन्होंने ये बातें केवल उसे फंसाने के लिए कीं।

आयत 17. फिर उन्होंने यीशु से पूछा कि क्या **कैसर को कर देना उचित है कि नहीं**। "उचित" के लिए शब्द का अनुवाद "सही" (NIV) या "अनुमति के योग्य" (NJB) भी हो सकता है। वे यह पूछ रहे थे कि व्यवस्था के अनुसार यह कार्य करना ठीक है या नहीं। JNT में इसका अनुवाद है, "क्या *तौरेत* रोमी सम्राट को कर देने की अनुमति देती है या नहीं?"

यह एक ऐसा प्रश्न था जो किसी भी प्रकार से उत्तर देने पर यीशु के लिए समस्या खड़ी कर सकता था यदि वह कहता, "नहीं" तो हेरोदियों ने रोमी अधिकारियों को बता देना था और उसे विद्रोह का दण्ड मृत्यु मिल सकता था (देखें लूका 23:2)। यदि वह उत्तर में "हां" कहता तो उन्होंने उसे यहूदी लोगों के सामने दोषी ठहराना था। उनमें से अधिकतर लोग बहुत क्रोध में आ जाते, क्योंकि वे रोमियों से घृणा करते थे, जिन्होंने उनके देश पर कब्जा किया हुआ था।

"कर" (*kēnsos*) चौदह से पैंसठ वर्ष की आयु के हर पुरुष पर जो रोमी कब्जे वाले इलाकों में रहता था, लगाया गया वार्षिक कर था। यह रोम द्वारा बीच-बीच में जनगणना किए जाने का एक कारण था (देखें लूका 2:1-4)। रोमियों द्वारा लगाए गए किसी भी कर को इस कर से अधिक बुरा नहीं माना जाता था। यह रोम के फलस्तीन के ऊपर शासन के अधिकार पर ज़ोर देता था। फरीसी लोग इस कर का विरोध करते थे, क्योंकि इस्राएल के ऊपर राजा परमेश्वर था और उसने उनके ऊपर राज करने के लिए किसी भी विदेशी को अनुमति देने की मनाही की थी (व्यवस्थाविवरण 17:14, 15)। जैक पी. लुईस ने लिखा है, "मूसा की व्यवस्था को मानते हुए कर देने या न देने का प्रश्न हेरोदेस के पद पर बैठने से लेकर यहूदी राज्य के पतन तक एक ज्वलंत मुद्दा था और इसी से ई. 132-135 में बार कोखबा के विद्रोह की प्रेरणा मिली थी।"[4] ई.

6 में जब यीशु बालक था, गलीली यहूदा ने इसी कर के कारण विद्रोह किया था (प्रेरितों 5:37)।[5]

आयत 18. यीशु को पता था कि इन लोगों के दिल में क्या है (यूहन्ना 2:24, 25) और उनके प्रश्न के पीछे क्या है। उसे मालूम था कि वे उसे **परख** रहे या "परीक्षा में डाल" रहे थे (4:1; 16:1 पर टिप्पणियां देखें)। उन्हें सीधा उत्तर देने के बजाय, जिसकी उन्हें उम्मीद थी, उसने उन्हें **कपटियो** कहकर डांट दिया (6:2, 5 पर टिप्पणियां देखें)। यीशु के साथ चालाकी नहीं हो सकती थी। उसने उन्हें बता दिया कि उसे उनकी चालाकी का पता था। उसे मालूम था कि उनका प्रश्न सच्चाई की खोज के लिए नहीं, बल्कि उसे फंसाने की कोशिश में था।

आयत 19. प्रभु ने उत्तर दिया, "**कर का सिक्का मुझे दिखाओ।**" "सिक्के" के लिए यूनानी भाषा का शब्द (*nomisma*) आम इस्तेमाल में लाए गए धन के लिए है। उस समय इस्राएल में चाहे कई प्रकार के सिक्के इस्तेमाल में लाए जाते थे पर यह कर केवल रोमी **दीनार** से ही चुकाया जा सकता था। फरीसियों के चेलों और हेरोदियों को चांदी के इन सिक्कों को लाना कोई बड़ी बात नहीं थी। दीनार एक दिन की मज़दूरी के बराबर होता था (20:2) इस कारण यह आम मिल जाता था।

आयत 20. यीशु ने दीनार को लिया, उसे हाथ में उठाते हुए पूछा, "**यह छाप और नाम किस का है?**" यह पक्का नहीं है कि जिस सिक्के को यीशु ने पकड़ा, उस पर अगस्तुस (31 ई.पू.-ई. 14) या तिबरियुस (ई. 14-37) की छाप थी या नहीं। पहला "कैसर" ग्युस जूलियस सीज़र था। "जूलियस" परिवार का नाम था और "कैसर" उपाधि थी, इस्तेमाल किया जाने वाला क्रम इस प्रकार था (1) नाम, (2) परिवार का नाम, और (3) उपाधि।[6] "कैसर" मूल में जूलियस कैसर की उपाधि थी पर बाद में यह रोमी सम्राटों का शीर्षक बन गया। नये नियम में अगस्तुस (लूका 2:1), तिबरियुस (लूका 3:1), क्लौदियुस (प्रेरितों 17:7; 18:2) और नीरो (प्रेरितों 25:8-12; फिलिप्पियों 4:22) सहित कई सम्राटों को "कैसर" कहा गया है। यीशु के जन्म के समय अगस्तुस शासन करने वाला सम्राट था, जिस कारण पुराने दीनार पर उसी की छाप होगी। तिबरियुस यीशु की सेवकाई के समय सम्राट था, जिस कारण नये सिक्के पर उसी की छाप रही होगी।

तिबरियुस के शासन का दीनार इस संदर्भ से अधिक मेल खाता लगता है, क्योंकि उस समय यहूदियों पर कर लगाने वाला वही था। एवरेट फर्ग्यूसन ने इनमें से एक सिक्के के उदाहरण की ओर ध्यान दिलाया है, जिसके चित पर माला के साथ सम्राट का सिर सजा हुआ था और उस पर लिखा था, "तिबरियुस कैसर अगस्तुस, दैवीय अगस्तुस का पुत्र।" दूसरी तरफ एक स्त्री बैठी थी, जिसे आम तौर पर तिबरियुस की माता लिविया माना जाता था, जिसे शांति या रोम की देवी बुलाया जाता होगा। इसके साथ "महायाजक" छपा होता था।[7]

आयत 21. जब लोगों ने सही-सही उस छाप और लिखे हुए को **कैसर का** के रूप में समझ लिया तो यीशु ने उत्तर दिया, "**जो कैसर का है, वह कैसर को दो।**" यीशु ने तर्क दिया कि सिक्का कैसर द्वारा जारी किया गया था और उस पर उसी की आकृति छपी हुई थी, इस कारण इसे उसी को लौटा देना उचित है। "दो" (*apodidōmi*) क्रिया में जो बनता है, उसे चुकाने का बोध मिलता है।[8] यह आयत 17 के "देना" (*didōmi*) क्रिया शब्द से मज़बूत है। लियोन मौरिस ने माना कि इन प्रश्न पूछने वालों द्वारा इस्तेमाल किया गया कैसर के सिक्कों का तर्क

अपने आप में यह मान लेना था कि वह कैसर को कर देने के देनदार हैं।[9] यह संदेश विशेषकर उन फरीसियों पर लागू होता था, जो कर चुकाने से बचना चाहते थे।[10]

यीशु ने उन्हें **जो परमेश्वर का है, वह परमेश्वर को** देने को कहा। वह कैसर से सम्बन्धित सिक्कों पर मूर्तिपूजक दावों का अनुमोदन नहीं कर रहा था; बल्कि वह यह कर रहा था, केवल परमेश्वर ही ईश्वरीय सम्मान और आराधना के योग्य है (4:10; देखें दानिय्येल 4:28–37; प्रेरितों 12:20–23)। परमेश्वर संसार पर अनन्तकाल के लिए राज करता है, जबकि सम्राट मानवीय अधिकार से, जो कुछ सालों तक रोमी साम्राज्य पर राज कर रहे थे। यीशु इस बात का संकेत दे रहा था कि सरकार के लिए अपने आपको चलाने के लिए कर लगाना उचित है। वह यह भी संकेत दे रहा था कि हर व्यक्ति परमेश्वर का देनदार है। मनुष्यों पर परमेश्वर की छाप है (उत्पत्ति 1:27; 5:1), इस कारण वे अपने जीवनों के लिए उसके देनदार हैं (रोमियों 12:1, 2)। यह ऐसा संदेश था, जिसे धर्म को न मानने वाले हेरोदियों को विशेषकर सुनना आवश्यक था।

आयत 22. प्रश्न पूछने वालों ने उस बुद्धि पर **अचम्भा** किया, जिससे यीशु ने उन्हें उत्तर दिया था। उसने उन्हें रोमी अधिकारियों या यहूदी समुदाय में से किसी का क्रोध भड़काए बिना ईमानदारी से जवाब दिया। फरीसियों के चेलों और हेरोदियों ने लोगों के सामने और अपमानित होने से पहले-पहले निकल जाने का समझदारी भरा निर्णय लिया।

पुनरुत्थान पर प्रश्न (22:23-33)

[23]उसी दिन सदूकी, जो कहते हैं कि मरे हुओं का पुनरुत्थान है ही नहीं उस (यीशु) के पास आए, और उससे पूछा, [24]"हे गुरु; मूसा ने कहा था कि यदि कोई बिना सन्तान मर जाए, तो उसका भाई उसकी पत्नी को विवाह करके अपने भाई के लिए वंश उत्पन्न करे। [25]अब हमारे यहां सात भाई थे; पहिला विवाह करके मर गया, और सन्तान न होने के कारण अपनी पत्नी को अपने भाई के लिए छोड़ गया। [26]इसी प्रकार दूसरे और तीसरे ने भी किया, और सातों तक यही हुआ। [27]सबके बाद वह स्त्री भी मर गई। [28]अत: जी उठने पर, वह उन सातों में से किस की पत्नी होगी? क्योंकि वह सब की पत्नी हो चुकी थी।"

[29]यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "तुम पवित्र शास्त्र और परमेश्वर की सामर्थ नहीं जानते; इस कारण भूल में पड़ गए हो। [30]क्योंकि जी उठने पर वे न विवाह करेंगे और न विवाह में दिए जाएंगे, परन्तु स्वर्ग में परमेश्वर के दूतों के समान होंगे। [31]परन्तु मरे हुओं के जी उठने के विषय में क्या तुम ने यह वचन नहीं पढ़ा, जो परमेश्वर ने तुम से कहा: [32]'मैं अब्राहम का परमेश्वर, और इसहाक का परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर हूं?' वह मरे हुओं का नहीं, परन्तु जीवतों का परमेश्वर है।" [33]यह सुनकर लोग उसके उपदेश से चकित हुए।

आयत 23. उसी दिन इस झगड़े को पिछले झगड़े के साथ मिलाते हुए क्रम के रूप में काम करता है। स्पष्टतया यीशु के अधिकार (21:23–27), उसके दृष्टांतों (21:28–22:14) और इन झगड़ों (22:15–46) पर प्रश्न दुख भोग सप्ताह के मंगलवार के दिन हुए।

इस बार **यीशु** के पास यहूदियों के कुलीन वर्ग **सदूकियों** की ओर से भेजे गए लोग थे (3:7;16:1 पर टिप्पणियां देखें)। इस छोटे परन्तु शक्तिशाली गुट ने यरूशलेम से अपने प्रभाव

का इस्तेमाल किया। सामरियों की तरह वे परमेश्वर के वचन के रूप में पंचग्रंथ अर्थात मूसा की केवल पांच पुस्तकों को मानते थे।[11] वे फरीसियों द्वारा मानी जाने वाली मौखिक परम्पराओं के साथ-साथ पुराने नियम की शेष पुस्तकों के अधिकार को नकारते थे।

फरीसियों के विपरीत, सदूकी लोग आत्मा की अमरता, मृत्यु के बाद जीवन, दण्ड और प्रतिफल, या मृतकों के **पुनरुत्थान** में विश्वास नहीं रखते थे (प्रेरितों 23:8)।[12] व्यवस्था में मूसा ने पुनरुत्थान के विषय पर कुछ स्पष्ट नहीं कहा, जिस कारण वे इस विचार को सिरे से नकारते थे। बाद में रब्बियों के साहित्य में इस झगड़े से उत्पन्न तनाव को दिखाया गया है। मिशनाह के अनुसार इस बात का इनकार करने कि पुनरुत्थान की शिक्षा तौरेत से ली गई है, वालों का, जिसमें सदूकी भी होंगे, आने वाले संसार में कोई भाग नहीं है।[13]

यीशु की सेवकाई के दौरान फरीसी लोग चाहे उसके सबसे बड़े विरोधी थे, परन्तु आरम्भिक कलीसिया के मुख्य विरोधी सदूकी लोग बन गए। इसका कारण यह था कि प्रेरित "मरे हुओं के जी उठने का प्रचार करते थे" (प्रेरितों 4:1, 2)। यीशु के समय में ये गुट चाहे जितने महत्वपूर्ण थे, परन्तु 70 ई. में यरूशलेम के विनाश के बाद ये खत्म हो गए।

आयत 24. फरीसियों के चेलों और हेरोदियों (22:15) की तरह सदूकी भी यीशू को फंसाने के लिए उसके पास आते थे (देखें 16:1)। उसे **हे गुरु** कहते हुए उन्होंने व्यवस्था (जिसे वे मानते थे) में से दोहराते हुए अपना प्रश्न आरम्भ किया: **"मूसा ने कहा था, कि यदि कोई बिना सन्तान मर जाए, तो उसका भाई उसकी पत्नी से विवाह करके अपने भाई के लिए वंश उत्पन्न करे।"** यह व्यवस्थाविवरण 25:5, 6 से लिया गया है जिसे आम तौर पर विधवा भाभी से विवाह का नियम के रूप में माना जाता है। ये शब्द लातीनी भाषा के *levir* शब्द से लिया गया है, जिसका अर्थ "देवर" है। विधवा भाभी से विवाह के नियम में था कि यदि कोई पुरुष बिना सन्तान के मर जाए, तो उसका भाई उसकी विधवा को पत्नी के रूप में लेकर मरे हुए के नाम से सन्तान पैदा करे।

विधवा भाभी से विवाह के नियम की परम्परा कई प्राचीन समाजों में मानी जाती रही है। इसका उद्देश्य मरे हुए के नाम को उसकी सन्तान को देने और परिवार में उसकी सम्पत्ति बनाए रखकर कायम रखना था। व्यवस्था दिए जाने से सैकड़ों साल पहले पुरखाओं के समय में विधवा भाभी से विवाह की यह परम्परा इस्तेमाल में थी। इस परम्परा की गम्भीरता इस तथ्य में देखी जाती है कि यहूदा के पुत्र **ओनान** को मृत्यु दण्ड दिया गया, क्योंकि उसने अपने भाई के लिए सन्तान उत्पन्न करने से मना कर दिया था (उत्पत्ति 38:8-10)। विधवा भाभी से विवाह का नियम मूसा द्वारा लागू किए जाने पर इसे गम्भीरता से लिया गया; इसकी किसी भी बात का उल्लंघन एक शर्मनाक अपराध माना जाता था (व्यवस्थाविवरण 25:7-10)।

आयतें 25-27. विधवा भाभी से विवाह के नियम को दोहराने के बाद सदूकियों ने एक दृश्य बताया, जिसमें **सात भाई** थे। सबसे बड़े भाई का **विवाह** हुआ और वह बिना किसी **सन्तान** के मर गया। विधवा भाभी से विवाह के नियम के अनुसार वह **अपनी पत्नी को** अपने से छोटे **भाई** के लिए छोड़ गया। ऐसा तब तक चलता रहा जब तक सातों भाई विवाह के बाद मर गए। अन्त में वह भी **मर गई**।

यीशु के सामने यह मामला एक वास्तविक घटना के रूप में पेश किया गया। परन्तु उन्होंने

पुनरुत्थान को असम्भव दिखाने के उद्देश्य से यह बेतुका दृश्य अपने आप ही बनाया होगा। ऐसी बहुत कम सम्भावना है कि किसी स्त्री ने सात पतियों के साथ विवाह किया हो और वह निःसन्तान रही हो, केवल एक सूरत को छोड़कर कि वह स्वयं बच्चा जनने के अयोग्य हो। यह हो सकता है कि सदूकियों को अपनी कहानी की प्रेरणा अप्रामाणिक पुस्तकों से मिली हो। टोबीट की पुस्तक में सारा नामक एक स्त्री का विवाह सात पतियों से हुआ था, यह स्पष्ट नहीं किया गया है कि वे सातों भाई ही थे। प्रत्येक मामले में विवाह खत्म होने से पहले पति की हत्या किसी पिसाच द्वारा कर दी गई थी।[14]

आयत 28. विधवा भाभी के साथ विवाह का नियम बताने और यह असामान्य दृश्य दिखाने के बाद सदूकियों ने पूछा, ''**अतः जी उठने पर, वह उन सातों में से किस की पत्नी होगी?**'' शायद सदूकियों ने पिछले अवसरों पर फरीसियों के साथ इस समस्या पर बात की थी।[15] तर्क देने की यह शैली परीक्षा करने को बेतुका बनाते हुए *reductio ad absurdum* के रूप में जानी जाती है। सदूकियों का मानना था कि परमेश्वर ऐसी किसी प्रथा की आज्ञा नहीं देगा जिससे ऐसी हास्यास्पद स्थिति बने।[16]

सदूकियों का प्रश्न इस गलत मान्यता पर आधारित है कि पुनरुत्थान में जीवन पृथ्वी पर के जीवन की तरह ही चलता रहता है। यहूदी लोग किसी पुरुष के अगले जीवन में कई स्त्रियों के साथ विवाह होने की बात को मान सकते थे, क्योंकि उनमें बहुविवाह की प्रथा प्रसिद्ध थी। पुराने नियम में ऐसा होने के कई उदाहरण मिलते हैं। परन्तु उनके लिए एक ही समय में एक स्त्री के एक से अधिक पति होने (बहुपति) की बात मानने में नहीं आती थी। सदूकियों के दृश्य की हास्यास्पद बात की हद उस स्त्री के एक के बाद एक *सातों* पतियों के साथ विवाह होने का विचार था।

आयत 29. जवाब में **यीशु** ने इन अगुओं को बताया कि वे **भूल में पड़ गए** या ''गलत'' थे (NIV)। यहां इस्तेमाल किए गए यूनानी क्रिया शब्द (*planaō*) का अर्थ ''भटक जाना'' या ''गुमराह होना'' है। इसका इस्तेमाल 18:12 में हुआ है, जहां भेड़ खो गई थी। फिर प्रभु ने उन पर दो आरोप लगाए। पहले, उसने कहा कि वे **पवित्र शास्त्र** से अनजान हैं। आयतें 31 और 32 में इस बात को विस्तार दिया गया है। दूसरा, उसने कहा कि वे **परमेश्वर की सामर्थ** को नहीं समझते। आयत 30 में इस आरोप को विस्तार दिया गया है।

आयत 30. यीशु ने समझाया कि परमेश्वर के पास लोगों को बदलने की सामर्थ है: ''**क्योंकि जी उठने पर वे न विवाह करेंगे और न विवाह में दिए जाएंगे, परन्तु स्वर्ग में परमेश्वर के दूतों के समान होंगे।**'' विवाह को दो परिदृश्यों से दिखाया गया है। ''विवाह करना'' पुरुष के लिए है, जिसने अपने लिए पत्नी को लेना होता है, जबकि ''विवाह में दिया जाना'' स्त्री के लिए है, जिसे उसके पिता के द्वारा एक पुरुष को दिया जाता है। यीशु ने बताया कि पृथ्वी के ये नियम स्वर्ग में लागू नहीं होते। आने वाले संसार में लोग स्वर्गदूतों (*angelos*) के *समान* होंगे, परन्तु स्वर्गदूत नहीं *बनेंगे*।[17] अपने आत्मिक स्वभाव के कारण वे न तो विवाह करते हैं और न बच्चों को जन्म देते हैं।

बाइबल के बाहर के यहूदी साहित्य में ऐसे ही विचार पाए जाते हैं। उदाहरण के लिए, टालमुड में कहा गया है,

> [भावी संसार इस संसार के जैसा नहीं है।] भावी संसार में न तो खाना, न पीना न वंशवृद्धि न कारोबार न द्वेष न घृणा न प्रतिस्पर्धा है, परन्तु धर्मी लोग अपने सिरों पर मुकुट लिए ईश्वरीय उपस्थिति की चमक पर दावत करते हुए बैठे हैं।[18]

नये नियम के अन्य वचनों में इस बात की पुष्टि है कि जी उठी देह और अस्तित्व की भावी स्थिति वर्तमान स्थिति से अलग होगी (1 कुरिन्थियों 15:35-58; 1 यूहन्ना 3:2)।

आयतें 31, 32. पुनरुत्थान में लोगों को बदलने की परमेश्वर की सामर्थ की बात करने के बाद यीशु पवित्र शास्त्र की सदूकियों की अज्ञानता की ओर मुड़ गया (22:29)। रब्बियों की शैली में उसने एक बार फिर यह पूछते हुए कि "**क्या तुम ने यह वचन नहीं पढ़ा ...?**" पुराने नियम से एक उद्धरण दिया (12:3, 4 पर टिप्पणियां देखें)। फिर उसने यह स्पष्ट कर दिया कि ये बातें **परमेश्वर ने कही** थीं। यीशु ने इन वचनों को "मूसा की पुस्तक" में से बताया और जलती हुई झाड़ी के विवरण की बात कही (मरकुस 12:26)।

यीशु को मालूम था कि सदूकियों का मकसद पुनरुत्थान को गलत साबित करना था, इस कारण उसने उन पुरखाओं का नाम उभारा, जिन्हें वे सम्मान देते थे और उसी हवाले का इस्तेमाल किया जिसे वे पुनरुत्थान की बात को साबित करने के लिए मानते थे। उसने किसी अस्पष्ट वचन को नहीं दोहराया, बल्कि इसके विपरीत उसी वचन का इस्तेमाल किया, जिससे हर कोई परिचित था। उसने निर्गमन 3:6 में परमेश्वर द्वारा अपनी पहचान की बात दोहराई: "**मैं अब्राहम का परमेश्वर, और इसहाक का परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर हूं।**" यीशु ने संकेत दिया कि अब्राहम, इसहाक और याकूब अभी भी जीवित हैं, क्योंकि परमेश्वर अभी भी उनका परमेश्वर है (देखें 8:11; लूका 13:28; 16:22-31; यूहन्ना 8:56)। उसने बात पूरी की, "**वह मरे हुओं का नहीं, परन्तु जीवतों का परमेश्वर है।**"

पुनरुत्थान की शिक्षा चाहे पुराने नियम में बहुतायत से पाई जाती है, परन्तु कई आयतें इसकी वास्तविकता की बात सिखाती या कम से कम उनका संकेत देती हैं।[19] परन्तु व्यवस्था में यह *साफ़-साफ़* नहीं बताया गया। सदूकी लोग केवल पंचग्रंथ को ही अधिकारात्मक मानते थे, जिस कारण यीशु ने उसी वचन का इस्तेमाल किया, जिसे वे *निर्विवाद रूप में* मानते थे कि यही विचार बताया गया है। बाद में टालमुड में "कट्टर" कहलाने वालों को उत्तर देने के लिए उसने यही ढंग इस्तेमाल किया, यह नाम दूसरों के साथ-साथ उन सदूकियों को दिया जाता था, जो पुनरुत्थान का इनकार करते थे। पूछा गया प्रश्न था कि "पुनरुत्थान की बात पंचग्रंथ से कैसे ली गई है?" रब्बी लोग इस शिक्षा को साबित करने के लिए कई हवाले बताते थे (निर्गमन 6:4; गिनती 18:28; व्यवस्थाविवरण 4:4; 11:21; 31:16),[20] परन्तु इनमें से एक भी उतना कायल करने वाला नहीं लगता, जितना मसीह द्वारा दिया गया हवाला है।[21]

आयत 33. यीशु का उत्तर सुनने के बाद **लोग उसके उपदेश से चकित हुए** (देखें 22:22, 46)। लूका 20:39, 40 कहता है, "तब यह सुनकर शास्त्रियों में से कुछ ने यह कहा 'हे गुरु, तुम ने अच्छा कहा' और उन्हें फिर उससे कुछ और पूछने का हियाव न हुआ।"

सबसे बड़ी आज्ञा पर प्रश्न
(22:34-40)

[34]जब फरीसियों ने सुना कि उस ने सदूकियों का मुंह बन्द कर दिया, तो वे इकट्ठे
हुए। [35]उन में से एक व्यवस्थापक ने उसे परखने के लिए, उस से पूछा। [36]''हे गुरु; व्यवस्था
में कौन सी आज्ञा बड़ी है?'' [37]उस ने उस से कहा, ''तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे
मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख। [38]बड़ी और मुख्य आज्ञा
तो यही है। [39]और उसी के समान यह दूसरी भी है, कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम
रख। [40]ये ही दो आज्ञाएं सारी व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं का आधार हैं।''

आयत 34. हेरोदियों के साथ फरीसियों के चेलों को यीशु को फंसाने के लिए भेजा गया था, परन्तु वे सफल नहीं हुए थे (22:15, 16, 22)। सदूकियों ने भी उसे बदनाम करने के लिए अपना पूरा ज़ोर लगा दिया था, पर वे भी असफल रहे थे (22:23, 33)। अपने समझदारी भरे उत्तर से उसने उनका **मुंह बंद कर दिया** था। ''मुंह बंद कर दिया'' (*phimoō*) जिसका अनुवाद आयत 12 में ''मुंह बंद हो गया'' हुआ है, का अक्षरश: अर्थ ''मुंह पर मुसका [पशुओं के मुंह पर बांधी जाने वाली जाली] लगाना'' हो सकता है। **जब फरीसियों ने** (यह सब) **सुना** तो वे यीशु के विरुद्ध षड्यन्त्र रचने के लिए इकट्ठा हो गए।

आयत 35. यीशु को फंसाने के अपने प्रयास में इन फरीसियों को भी वैसे ही असफलता मिली। इनकी असफलता का एक कारण, वह व्यक्ति हो सकता है जिसे उन्होंने अपने प्रतिनिधि के रूप में चुना था। प्रश्न पूछने वाले सब लोगों में से यह आदमी सबसे साफ दिल का लगता है। मत्ती ने उसे **उनमें से एक व्यवस्थापक** (*nomikos*) बताया है। कई हस्तलिपियों में बाद वाला शब्द मिटा दिया गया है और कुछ लोगों का मानना है कि नकल करने वाले द्वारा इसे लूका 10:25 से लिया गया है जिसमें ऐसी, चाहे अलग कहानी बताई गई है।[22] यहूदी संदर्भ में ''व्यवस्थापक'' शब्द उस व्यक्ति के लिए होता था, जिसने मूसा की व्यवस्था की पढ़ाई की हो यानी वह ''*तौरेत* का माहिर'' होता था (JNT)। मरकुस ने पर्यायवाची शब्द ''शास्त्री'' (*grammateus*) का इस्तेमाल करते हुए इस आदमी की बात की ओर संकेत दिया कि उसने अपनी ओर से ही प्रश्न पूछा था (मरकुस 12:28)। शास्त्री का काम व्यवस्था की व्याख्या करना और मौखिक व्यवस्था को जानना तथा लागू करना होता था (2:4 पर टिप्पणियां देखें)।

आयत 36. यीशु को परखते हुए उस शास्त्री ने पूछा, **''हे गुरु; व्यवस्था में कौन सी आज्ञा बड़ी है?''** यहूदी विद्वानों के बीच इस प्रश्न पर आमतौर पर बहस होती थी। वे व्यवस्था को एक सामान्य वाक्य या आज्ञा में संक्षिप्त करना चाहते थे। टालमुड में ऐसा ही एक प्रश्न मिलता है: ''वह छोटी आयत कौन सी है, जिस पर तौरेत की सभी आवश्यक बातें निर्भर हैं?''[23] इसका उत्तर नीतिवचन 3:6 से दिया जाता है: ''उसी को स्मरण करके सब काम करना, तब वे तेरे लिए सीधा मार्ग निकालेगा।'' यह बात दिलचस्प है कि यह उत्तर पंचग्रंथ के बजाय नीतिवचन में से लिया गया था।

रब्बी सिमलाई की शिक्षा थी कि मूसा को व्यवस्था में 613 आज्ञाएं मिली थीं, परन्तु दाऊद ने इन्हें ग्यारह (भजन संहिता 15), यशायाह ने छह (यशायाह 33:15), मीका ने तीन (मीका

6:8), यशायाह ने फिर दो (यशायाह 56:1), आमोस ने एक (आमोस 5:4) और हबक्कूक ने एक बना दिया था (हबक्कूक 2:4)।[24]

आयतें 37, 38. यीशु ने शास्त्री को उत्तर दिया, **''तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख।''** यह उद्धरण व्यवस्थाविवरण 6:5 से लिया गया है। इब्रानी धर्मशास्त्र में ''मन,'' ''प्राण'' और ''शक्ति'' तीन शब्द मिलते हैं। मत्ती के उद्धरण में ''मन'' शब्द मिलाया गया है, परन्तु ''शक्ति'' शब्द निकाल दिया गया है। मरकुस और लूका में इस वचन को दोहराने पर ''मन,'' ''प्राण,'' ''बुद्धि'' और ''शक्ति'' के चार शब्द हैं (मरकुस 12:30; लूका 10:27)। सुसमाचार के सहदर्शी विवरणों में भिन्नताओं का कारण सप्तति अनुवाद में से इस्तेमाल करना हो सकता है। इस यूनानी अनुवाद की कुछ प्राचीन प्रतियों में ''मन'' (*leb*) के लिए ''बुद्धि'' (*dianoia*) शब्द है।

यह **बड़ी और मुख्य आज्ञा** शेमा के बाद आती है। शेमा व्यवस्थाविवरण 6:4 में मिलती है और ''सबसे बड़ी आज्ञा'' व्यवस्थाविवरण 6:5 में है। विस्तार देते हुए गिनती 15:37-41 सहित अन्य आयतों को शेमा में मिलाया गया है (व्यवस्थाविवरण 11:13-21 भी देखें)। ''शेमा'' नाम प्रार्थना के पहले शब्द (*shama'*) से लिया गया है, जिसका अर्थ है ''सुनना'' (व्यवस्थाविवरण 6:4)। मरकुस के अनुसार यीशु ने अपने उत्तर में यह भी जोड़ा, ''हे इस्राएल सुन; प्रभु हमारा परमेश्वर एक ही प्रभु है'' (मरकुस 12:29)।

आयत 39. सबसे बड़ी आज्ञा के शास्त्री के प्रश्न का उत्तर देने के बाद (22:36) यीशु ने आगे कहा, **''उसी के समान यह दूसरी भी है कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख''**[25] (देखें 5:43; 19:19; रोमियों 13:9, 10; गलातियों 5:14; याकूब 2:8; 1 यूहन्ना 4:21)। यह उद्धरण सप्तति में लैव्यव्यवस्था 19:18 से लिया गया है। मसीह से पहले और बाद के अन्य यहूदी गुरु पड़ोसियों के साथ उचित व्यवहार पर ज़ोर देते थे। रब्बी हिलेल ने सुनहरी नियम के नकारात्मक रूप के साथ व्यवस्था को संक्षिप्त किया: ''जो बात तुझे घृणित लगती है, उसे अपने पड़ोसी के साथ न कर।''[26] रब्बी अकीबा का कहना था कि ''तौरेत का मुख्य नियम'' है कि ''अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखो।''[27] इससे सम्बन्धित वचन में लूका में यीशु ने ''पड़ोसी'' का अर्थ कोई भी ज़रूरतमंद बताया, जिसकी सहायता करने की सामर्थ किसी के पास हो (लूका 10:29-37)।

आयत 40. यीशु ने बात खत्म की, **''ये ही दो आज्ञाएं सारी व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं का आधार हैं।''** कहते हैं कि परमेश्वर से प्रेम रखना, दस आज्ञाओं में से पहली चार आज्ञाओं को पूरा कर देता है, जबकि पड़ोसी से प्रेम करना शेष छह आज्ञाओं को (निर्गमन 20:1-17; व्यवस्थाविवरण 5:6-21)। यह सही है, परन्तु मसीह ने इससे भी बढ़कर कहा है। यहां ''सारी व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं'' पूरी इब्रानी बाइबल को कहा गया है। ''आधार'' (*kremann-umi*) के लिए शब्द का अनुवाद ''लटकाना'' (KJV) भी हो सकता है। ''जिस प्रकार दरवाज़ा अपने कब्ज़ों पर टिका होता है, वैसे ही पूरा [पुराना नियम] इन दो आज्ञाओं पर टिका है।''[28]

शास्त्री ने यीशु के उत्तरों के साथ पूरी तरह से सहमति जताते हुए अपनी गहन समझ को दिखाया (मरकुस 12:32, 33)। यीशु उससे इतना प्रभावित हुआ कि उसने उससे कहा, ''तू परमेश्वर के राज्य से दूर नहीं'' (मरकुस 12:34)।

मसीहा के विषय में प्रश्न (22:41-46)

41जब फरीसी इकट्ठे थे, तो यीशु ने उन से पूछा। 42''मसीह के विषय में तुम क्या
सोचते हो? वह किसका पुत्र है?'' उन्होंने उस से कहा, ''दाऊद का।'' 43उस ने उन से
पूछा, ''तो दाऊद आत्मा में होकर उसे प्रभु क्यों कहता है?

44'प्रभु ने, मेरे प्रभु से कहा;
मेरे दाहिने बैठ,
जब तक कि मैं तेरे बैरियों को तेरे पांवों के नीचे न कर दूं।'

45भला, जब दाऊद उसे प्रभु कहता है, तो वह उसका पुत्र कैसे ठहरा?'' 46इसके उत्तर में
कोई भी एक बात न कह सका। उस दिन से किसी को फिर उस से कुछ पूछने का साहस
न हुआ।

आयत 41. उस दिन **यीशु** मन्दिर में सुबह-सुबह सिखाने लगा था (21:23)। उसके शत्रुओं ने उसे व्यवस्था के उल्लंघन करवाने या रोमी कानून के साथ उलझन में डालने के लिए तीन प्रश्न तैयार किए थे (22:15-40)। उसने तीनों प्रश्नों का उत्तर बड़ी सफाई से दिया। उनके प्रश्नों का उत्तर देने के बाद प्रभु ने अपना ही एक **प्रश्न** पूछा। उसने यह प्रश्न **फरीसियों** से किया था, जो उसके विरुद्ध अपनी अगली चाल चलने के लिए वहां इकट्ठा हुए थे (22:34)। मरकुस 12:35 इस बात की पुष्टि करता है कि यह प्रश्न पूछने के समय यीशु अभी भी मन्दिर में ही था।

आयत 42. यीशु ने यह नहीं पूछा कि ''तुम क्या कहते हो कि मैं कौन हूं?'' पहले इसी प्रश्न के उत्तर में पतरस ने अंगीकार किया था कि वह ''जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह'' है (16:15, 16)। इसके विपरीत अपनी पहचान की चर्चा के लिए यीशु ने एक परोक्ष ढंग इस्तेमाल किया। उसने उनसे पूछा, **''मसीह के विषय में तुम क्या सोचते हो?''** कहीं और अपने सुनने वालों की सोच पर ज़ोर देने के लिए उसने ''तू क्या सोचता है? वह किसका पुत्र है?'' प्रश्न का इस्तेमाल किया था (17:25; 18:12; 21:28)। इस अवसर पर वह उनसे मसीहा की वंशावली पर सवाल कर रहा था।

इन लोगों ने सही उत्तर दिया था, ''**दाऊद का**।'' यीशु ने जान-बूझकर उनसे यह उत्तर दिलवाया था। दो दिन पहले, रविवार को विजयी प्रवेश में वह गद्हे पर सवार होकर यरूशलेम में आया था। उस समय उन्होंने ''दाऊद की सन्तान'' के रूप में उसकी प्रशंसा की (21:9)। सोमवार को प्रधान याजक और शास्त्री इस बात से चिड़ गए कि बच्चों ने ''दाऊद की सन्तान को होशाना'' (21:15, 16) की पुकार के साथ यीशु का सम्मान किया था ''दाऊद का पुत्र'' मसीहा का रुतबा था, जिससे पुराने नियम की भविष्यवाणियों के पूरा होने की उम्मीद की झलक मिलती है (1:1; 9:27; 12:23 पर टिप्पणियां देखें)।

आयत 43. यीशु ने दूसरा प्रश्न पूछा, **''तो दाऊद आत्मा में होकर उसे प्रभु क्यों कहता है?''** वह ''ज्ञात'' (दाऊद के पुत्र के रूप में मसीह) से जिसे वह खुलेआम मानते थे, अज्ञात (दाऊद के प्रभु के रूप में मसीह) की ओर बढ़ गया। जैसा कि लुईस ने कहा है, ''यीशु से पहले उनका मुंह बंद करने को कहा गया था, जिन्होंने उसकी महिमा दाऊद के पुत्र के रूप में की थी, परन्तु अब वह तर्क देता है कि वह पद उसके लिए बहुत छोटा है।''[29] यीशु ने दावा किया कि

दाऊद, जिसने कई भजन लिखे, को पवित्र आत्मा की प्रेरणा थी (देखें 2 शमूएल 23:2; प्रेरितों 1:16; 2:30; 2 पतरस 1:21)। भजन संहिता 110 का अभिलेख जिसे ''दाऊद का भजन'' पढ़ा जाता है, मूल लेख के बहुत बाद में जोड़ा गया।

आयत 44. इस्तेमाल किया गया उद्धरण भजन संहिता 110:1 से लिया गया है और यह सप्तति अनुवाद (LXX) से बहुत मेल खाता है:

'' 'प्रभु ने, मेरे प्रभु से कहा;
मेरे दाहिने बैठ,
जब तक कि मैं तेरे बैरियों को तेरे पांवों के नीचे न कर दूं।' ''

यह महत्वपूर्ण वचन नये नियम में कई और जगह दोहराया गया है या इसका संकेत दिया गया है।[30] ''प्रभु'' (यहवह, परमेश्वर का सही नाम) और दूसरे वाले ''प्रभु'' (*'Adon*) के बीच अन्तर बनाया गया है। धर्मशास्त्र यीशु मसीह के परमेश्वर पिता के दाहिना हाथ ऊंचा किए जाने की भविष्यवाणी करता है। किसी राजा के शत्रुओं को उसके पांवों के नीचे रखना उन्हें उसके अधीन करने का संकेत था।

इब्रानी धर्मशास्त्र की अन्तिम पंक्ति में ''पांव रखने की चौंकी'' शब्द है: ''जब तक मैं तेरे वैरियों को तेरे पांवों के लिए *पांव रखने की चौंकी* न बना दूं।'' शास्त्रियों ने राजाओं की प्राचीन पांव रखने की चौकियां ढूंढ़ी हैं, जिन पर उनके शत्रुओं के नाम अंकित हैं (आम तौर पर पेट के बल पड़े हुए)।[31]

आयत 45. यीशु ने एक और प्रश्न के साथ अपनी बात पूरी की: **''भला, जब दाऊद उसे प्रभु कहता है, तो वह उसका पुत्र कैसे ठहरा?''** यदि मसीहा दाऊद का पुत्र था, तो परमेश्वर की प्रेरणा से दाऊद ने उसे ''प्रभु'' क्यों कहा? कितना जटिल प्रश्न था! कोई पूर्वज शायद ही, अपने वंश को ''प्रभु'' कहकर सम्बोधित करे। मसीहा दाऊद का वंशज कैसे हो सकता था और फिर भी उससे बड़ा? मसीहा ''प्रभु'' और ''दाऊद का पुत्र'' दोनों एक ही कारण से हो सकता था कि वह ईश्वर है, जो शरीर में जन्म लेने से पहले अस्तित्व में था (देखें यूहन्ना 8:56–58)। यीशु ने पहले मन्दिर, योना और सुलैमान से बड़ा होने का दावा किया था (12:6, 41, 42)। यहां भी परोक्ष रूप में उसने दाऊद से बड़ा होने का दावा किया।

आयत 46. यीशु ने **उस दिन** अपने आलोचकों का मुंह बंद कर दिया। वे इतनी बुरी तरह से पराजित हो गए कि उस हफ्ते यानी उसकी दिखावटी पेशियों तक किसी ने **उससे कुछ पूछने** का साहस नहीं किया। उनका मुंह चाहे बंद कर दिया गया था, परन्तु वे बदले नहीं थे। वे उससे और भी घृणा करने लगे थे और लोगों के कम से कम विरोध के साथ उससे बदला लेने के बहाने ढूंढ़ने के लिए कोशिश करते रहे।

❖❖❖❖❖ **सबक** ❖❖❖❖❖

दो मूर्खता भरे प्रश्न और दो समझदारी वाले प्रश्न (22:15-46)

प्रगट शत्रु अजीब समझौते करते हैं। यीशु के शत्रुओं ने उससे चालाकी भरे प्रश्न पूछने के

लिए एका कर लिया। उन्होंने पूछा कि कैसर को कर देना उचित है या नहीं (22:15-22)। उसने इस प्रश्न से हंसना नहीं था। उन्होंने यह भी पूछा कि स्वर्ग में किसी स्त्री के कितने पति हो सकते हैं (22:23-33)। एक अर्थ में यीशु ने उत्तर दिया, "बाइबल की जानकारी न होने के लिए तुम्हें शर्म आनी चाहिए!"

अब तक के पूछे गए दो प्रश्न 22:34-46 में मिलते हैं। यीशु ने सबसे बड़े दो उत्तर 22:37-40 में दिए। व्यवस्थापक को जिसने पूछा था "कौन सी आज्ञा बड़ी है?" (22:36), यीशु ने बताया कि सब बातें जो परमेश्वर हमसे चाहता है, उनका आधार *अगापे* प्रेम ही है। हमें अपने आपसे दूसरा प्रश्न पूछना चाहिए कि "मसीह के विषय में तुम क्या सोचते हो? वह किसका पुत्र है?" (22:42), क्योंकि इस उत्तर के अनन्तकालिक परिणाम हैं। यीशु परमेश्वर का पुत्र है और हमारे लिए उसकी आवाज़ को सुनकर उसकी बात माननी आवश्यक है (देखें 17:5)।

कर देने पर प्रश्न (22:15-22)

यीशु ने कभी कर देने का विरोध नहीं किया। उसने मत्ती नामक महसूल लेने वाले को अपना प्रेरित चुनने के लिए बुलाया (9:9)। उसने महसूल लेने वालों (कर इकट्ठा करने वालों) और पापियों को ग्रहण किया और वह यरीहो के चुंगी लेने वालों के सरदार जक्कई पर अनुग्रहकारी था (लूका 19:1-10)। फरीसी और चुंगी लेने वाले का दृष्टांत चुंगी लेने वाले को धर्मी ठहरे हुए और फरीसी को दोषी ठहरे हुए के रूप में दिखाता है (लूका 18:9-14)। इस तथ्य के अलावा कि यीशु ने तुच्छ माना जाने वाला कर चुकाया, जो राज्य की भलाई के लिए था, उसने मन्दिर का कर भी चुकाया, जिससे भ्रष्ट याजकाई चलती थी (17:24-27)।

हर मसीही को कर देना चाहिए सरकार चाहे किसी की भी क्यों न हो। यीशु ने परमेश्वर की निन्दा करने वाले, मूर्तिपूजक हाकिमों के अधीन भी "जो कैसर का है वह कैसर को दो" के नियमों को अपवाद नहीं बनाया। काफ़िर रोमी सरकार के अधीन रहते हुए पौलुस ने भी सब मसीही लोगों के लिए सभी सरकारी अधिकारियों के अधीन रहने की आज्ञा दी क्योंकि ये शक्तियां "परमेश्वर की ओर से ठहराई" जाती हैं (रोमियों 13:1)। पतरस ने इसे स्वीकारते हुए माना (1 पतरस 2:13-15) सरकार का सामना करना परमेश्वर का सामना करना है और कर देने से इनकार करना परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन है। हाकिमों को कर लगाने का अधिकार तो है, परन्तु उन्हें धर्म के मामलों में हस्तक्षेप करने का अधिकार नहीं है। ऐसा करने पर वे परमेश्वर द्वारा उन्हें सौंपे गए काम की सीमाओं को लांघते हैं। उस स्थिति में मसीही लोगों को सामना करने का अधिकार है और उन की जिम्मेदारी है।

पुनरुत्थान (22:23-33)

परमेश्वर के विश्वास करने वाले लोग पुनरुत्थान या मृत्यु के बाद के जीवन में विश्वास कैसे नहीं कर सकते? पौलुस को कुरिन्थुस में कुछ ऐसे ही मसीही मिले जो पुनरुत्थान या जी उठने में विश्वास नहीं करते थे। वे यूनानी दर्शन यानी फिलॉस्फी से प्रभावित लगते थे जिसके अनुसार शरीर पाप से भरा है और आत्मा ऊर्जा है जो मृत्यु के समय शरीर में से निकल जाती

है। माना यह जाता था कि यह ऊर्जा प्रकृति की ऊर्जा में फिर से समा जाती है या उस ईश्वर में जिसने सारे संसार को बनाया। पौलुस द्वारा कुरिन्थियों को दी गई शिक्षा सदूकियों या पुनरुत्थान पर संदेह करने वाले अन्य लोगों को गलत ठहराती है।

कुरिन्थुस के लोग जो पुनरुत्थान में विश्वास नहीं रखते थे, स्पष्टतया मसीह के पुनरुत्थान को नहीं मानते थे, परन्तु अन्त में अपने पुनरुत्थान को मानते थे। पौलुस ने कहा कि यदि मसीह मुर्दों में से नहीं जी उठा तो हम भी नहीं जी उठेंगे। परन्तु यदि वह जी उठा है तो हम भी जिलाए जाएंगे (1 कुरिन्थियों 15:12–19)। पौलुस ने पुनरुत्थान के सात निष्कर्ष बताए:

1. यदि मसीह मुर्दों में से जी उठा है, जिसे मसीही बनने के समय कुरिन्थुस के भाइयों ने स्वीकार किया था तो वे पुनरुत्थान से इनकार नहीं कर सकते थे।

2. यदि मसीह मुर्दों में से जी नहीं उठा तो कोई भी नहीं जिलाया जाएगा। फिर पौलुस ने इस निष्कर्ष को मानने के परिणाम बताएं।

3. यदि मसीह जी नहीं उठा तो सुसमाचार का प्रचार व्यर्थ, बेकार था।

4. यदि मसीह मुर्दों में से जिलाया नहीं गया तो पौलुस और दूसरे सब लोग जो कहते थे कि वे जी उठे मसीह के गवाह हैं, सब झूठे थे।

5. यदि मसीह मुर्दों में से जिलाया नहीं गया था, तो उनका विश्वास व्यर्थ और खोखला था। किसी ऐसे व्यक्ति में जो मर गया हो और जीवित न हुआ हो, विश्वास करने का क्या लाभ होना था? सब ने मरना है। यदि यीशु मुर्दों में से जिलाया नहीं गया तो वह अन्य कथित उद्धारकर्त्ताओं से बेहतर नहीं है।

6. यदि मसीह जिलाया नहीं गया तो हम अभी तक अपने पापों में हैं और उद्धार की किसी भी आशा के बिना हैं, क्योंकि उसके लहू में हमारे पाप साफ करने की कोई शक्ति नहीं है।

7. सबसे परेशान करने वाला परिणाम शायद यह है कि यदि मसीह जी नहीं उठा, तो जितने लोग प्रभु में पहले मर गए हैं उन सब का नाश हुआ क्योंकि कब्र के आगे तो कोई आशा ही नहीं है।

मसीह के पुनरुत्थान के पक्ष में इन मज़बूत दलीलों के देने के बाद पौलुस ने और निष्कर्ष निकाला, "यदि हम केवल इसी जीवन में मसीह से आशा रखते हैं तो हम सब मनुष्यों से अधिक अभागे हैं" (1 कुरिन्थियों 15:19)। उसने घोषणा की कि "मसीह मुर्दों में से जी उठा है, और जो सो गए हैं, उन में पहिला फल हुआ" (1 कुरिन्थियों 15:20)।

विधवा भाभी से विवाह का नियम (22:23-28)

यहूदा के पुत्र ओनान वाली घटना का उदाहरण है, जो दिखाता है कि परमेश्वर विधवा भाभी के विवाह की प्रथा को मूसा से व्यवस्था में शामिल कराने से बहुत पहले इसे सम्मान देता था। "भूमि पर वीर्य गिराकर नाश [करने]" के ओनान के कुकृत्य से परमेश्वर इतना नाराज़ हुआ कि उसने उसका प्राण ले लिया (उत्पत्ति 38:8–10)।

इस प्रथा के काम करने का एक और उदाहरण रूत की पुस्तक में मिलता है। रूत के पति महलोन की मृत्यु हो जाने के बाद उसकी सास नाओमी को इस बात का दुख था कि उसके कोई और बेटा नहीं था, जो रूत से विवाह करके देवर की भूमिका निभा सकता (रूत 1:11–13)।

अन्त में रूत के पति के एक रिश्तेदार बोअज़ ने उससे विवाह कर लिया। उससे पहले यह सुनिश्चित करना आवश्यक था कि महलोन का कोई और निकट सम्बन्धी न हो, जो उसकी पत्नी से विवाह करने का इच्छुक हो। यह सुनिश्चित हो जाने पर उसने रूत से विवाह कर लिया (रूत 4:1-10)। ऐसा करने से यह मोआबी स्त्री दाऊद राजा की और अन्त में यीशु की पूर्वज बन गई (रूत 4:17, 22; मत्ती 1:5, 6, 16)।

कुछ लोग इस बात पर सवाल करते हैं कि मसीह के समय में विधवा भाभी से विवाह का नियम प्रभावी था या नहीं। इसके प्रभावी न होने का कोई कारण नहीं था और फरीसी लोग पंचग्रंथ के लिए अपने सम्मान के कारण इसे आदर देते थे।[32]

प्रेम (22:34-40)

यीशु ने मत्ती 22:37-39 में दो बड़ी आज्ञाओं को याद दिलाया। इन आज्ञाओं के बारे में बाइबल काफ़ी कुछ कहती है (यहोशू 22:5; भजन संहिता 31:23; यूहन्ना 14:15, 21, 23; रोमियों 8:28; याकूब 1:12; 2:5; 1 यूहन्ना 4:8, 19, 21)। दोनों में प्रेम पाया जाता है। आइए प्रेम के तीन गुणों की समीक्षा करते हैं।

1. *प्रेम हम सीखते हैं।* हम जन्म से प्रेम करने वाले नहीं होते। यीशु के सुनने वालों की तरह ही हमें भी आज दूसरों से प्रेम करने की आज्ञा है।

2. *प्रेम किया जाता है।* प्रेम अग्रसक्रिय है। संसार के लिए यीशु को जानने के लिए आना आवश्यक है, क्योंकि वह प्रेम की मूर्त है।

3. *प्रेम इस संसार की एक मात्र आशा है।* हमारे संसार का पाप प्रेम को फिर से खोजना होगा। संसार को यीशु मसीह को जानना आवश्यक है क्योंकि यह प्रेम की मूर्त है।

दाऊद का पुत्र (22:41-46)

यीशु के कुछ समकालीनों को लगता था कि वह कोई धोखेबाज है। अन्य उसे एक नबी मानते थे, बिल्कुल वैसे ही जैसे वह यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को देखते थे। कइयों ने उसके आश्चर्यकर्मों से यह निष्कर्ष निकाला था कि वह दाऊद का पुत्र मसीह है। परन्तु उसके पुनरुत्थान से पूर्व, कुछ लोगों ने समझ लिया कि वह परमेश्वर का ईश्वरीय पुत्र है। यीशु ने दिखाया कि चाहे वह दाऊद की सन्तान था, परन्तु वास्तव में वह दाऊद से भी बड़ा था। असल में वह दाऊद का "प्रभु" था।

आज यीशु के बारे में लोगों के अलग-अलग विचार पाए जाते हैं। कुछ लोग उसे धोखेबाज के रूप में देखते हैं। अन्य उसे केवल अच्छा गुरु या नबी के रूप में देखते हैं। परन्तु हमें उसे मसीह और प्रभु दोनों मानना आवश्यक है (प्रेरितों 2:36)। वह समय के आरम्भ से ही परमेश्वर के साथ था और स्वयं परमेश्वर है। वह सृष्टि की रचना में सक्रिय था (यूहन्ना 1:1-5) और समय के पूरा होने पर उसने हमें बचाने के लिए मनुष्य रूप धारण किया (यूहन्ना 1:14, 18; फिलिप्पियों 2:6-11)। वह सचमुच में "इम्मानुएल" अर्थात "परमेश्वर हमारे साथ" है (1:23)।

डेविड स्टिवर्ट

टिप्पणियां

[1]फरीसी लोग रोमी कब्जे को एक आवश्यक बुराई के रूप में स्वीकार करते थे पर वह किसी प्रकार से हेरोदेस का समर्थन नहीं करते थे। [2]यीशु के प्रति अपने विरोध में फरीसी लोग सदूकियों के साथ भी मिल गए थे (16:1 पर टिप्पणियां देखें)। [3]क्रेग एस. कीनर, *ए कमैंट्री ऑन द गॉस्पल ऑफ़ मैथ्यू* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1999), 524, एन. 200. प्लुटार्क *मोरेलिया* 48ई-74ई (*हाऊ टू टैल फ्लैटरर फ्रॉम ए फ्रैंड*) में चापलूसी पर विस्तार से चर्चा की है। [4]जैक पी. लुईस, *द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू,* पार्ट 2, द लिविंग वर्ड कमैंट्री (आस्टिन, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1976), 100. [5]जोसेफस *एन्टिक्विटीस* 8.1.1; वार्स 2.8.1. [6]एवरेट फर्ग्यूसन, *बैकग्राउंड्स ऑफ अर्ली क्रिश्चियनिटी,* 2रा संस्क. (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1993), 26. [7]वही, 86. [8]सरकार का सिद्धांत परमेश्वर की ओर से दिया गया है (दानिय्येल 2:21, 37, 38; रोमियों 13:1-7; 1 पतरस 2:13-17)। सरकार आम तौर पर किसी सेना, पुलिस बल अच्छी सड़कें और न्याय प्रणाली की रक्षा उपलब्ध कराती है। इन संस्थानों का खर्च लोगों द्वारा वहन किया जाना आवश्यक है। [9]लियोन मौरिस, *द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू,* पिल्लर कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1992), 557. [10]लुईस, 101.

[11]जोसेफस *एन्टिक्विटीस* 18.1.4. [12]जोसेफस *वार्स* 2.8.14. [13]मिशनाह *सेन्हेड्रिन* 10.1. [14]टोबिट 3:7-9. [15]लुईस, 103. [16]रॉबर्ट एच. माउंस, *मैथ्यू,* न्यू इंटरनैशनल बिब्लिकल कमैंट्री (पीबॉडी, मैसाचुएट्स: हैंड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1991), 209. [17]स्पष्टतया सदूकी स्वर्गदूतों में विश्वास नहीं रखते थे (प्रेरितों 23:8) चाहे पंचग्रंथ में आम तौर पर उनका उल्लेख है (उत्पत्ति 16:7; 19:1; 21:17; 22:11; 24:7; 28:12; 31:11; 32:1; 48:16; निर्गमन 3:2; 14:19; 23:20; 32:34; 33:2; गिनती 20:16; 22:22)। [18]टालमुड *बेराक्रोथ* 17ए। [19]अय्यूब 14:14; 19:25-27; भजन संहिता 16:9-11; 17:15; 49:15; 73:24-26; यशायाह 25:8; 26:19; 53:10; यहेजकेल 37:1-14; दानिय्येल 12:1-3, 13; होशे 6:2; 13:14. [20]टालमुड *सेन्हेड्रिन* 90बी।

[21]रब्बियों का एक और हवाला व्यवस्थाविवरण 32:39 से लिया गया है जहां परमेश्वर ने कहा, "मैं ही मार डालता, और मैं जिलाता भी हूं; मैं ही घायल करता, और मैं ही चंगा भी करता हूं" (टालमुड *पेसाहिम* 68ए)। [22]ब्रूस एम. मेज़गर, *ए टैक्सचुअल कमैंट्री ऑन द ग्रीक न्यू टैस्टामेंट,* 2रा संस्क. (स्टटगर्ट: जर्मन बाइबल सोसायटी, 1994), 48-49. [23]टालमुड *बेराक्रोथ* 63ए। [24]टालमुड *मेक्रोथ* 24ए। [25]छद्म पुस्तकों के कुछ भागों में परमेश्वर से प्रेम करने और पड़ोसी से प्रेम करने के विचार भी जोड़े गए हैं। (*टैस्टामेंट ऑफ़ इस्साकार* 5.2; 7.6; *टैस्टामेंट ऑफ़ दान* 5.3.) [26]टालमुड *शब्बथ* 31ए। [27]जेनसिस *रब्बाह* 24.7. [28]वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामैंट एंड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिटरेचर,* 3रा संस्क., संशो. व संपा. फ्रैडरिक डब्ल्यू. डैंकर (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 2000), 566. [29]लुईस, 107. [30]मत्ती 26:64; मरकुस 12:36; 14:62; 16:19; लूका 20:42, 43; 22:69; प्रेरितों 2:34, 35; 1 कुरिन्थियों 15:25; इफिसियों 1:20, 22; कुलुस्सियों 3:1; इब्रानियों 1:3, 13; 8:1; 10:12, 13; 12:2.

[31]एक उदाहरण के लिए, देखें एल्फ्रेड जे. होर्थ, *आर्कियोलॉजी एण्ड द ओल्ड टैस्टामैंट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक्स, 1998), 213. [32]मिशनाह में एक पुस्तक *येबामोथ* विधवा भाभी से विवाह के विषय पर है।